www.thearyasamaj.org

POSTAGE PRE-PAID
MAIL BUSINESS CENTRE
JAN

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 73 अंक : 41
सृष्टि संवत् 1960853117
8 जनवरी, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-73, अंक : 41, 5-8 जनवरी 2017 तदनुसार 25 पौष सम्वत् 2073 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मनुष्य बन

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

(गतांक से आगे)

कहो, वेद का 'मनुर्भव' कहना कल्याणसाधक है वा नहीं ? निःसन्देह मनुष्य बनना संसार में शान्ति स्थापना करने का एकमात्र साधन है। सभी मनुष्य बन जाएँ तो यह मार-काट, यह लूट-खसूट उसी क्षण समाप्त हो जाए।

निःसन्देह मनुष्यत्व प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। शङ्कराचार्य जी ने कहा- 'जन्तूनां नरजन्म दुर्लभम्।' सचमुच नरतन पाना दुस्साध्य है, दुस्साध्य है, दुस्साध्य है किन्तु असाध्य नहीं। वेद इससे आगे जाता है-मनुष्य जन्म, नरतन तो तूने प्राप्त कर लिया, 'मनुष्य भी बन' ! केवल नर-तनधारी ही न रह, नर-मनधारी भी बन ! इसीलिए वेद ने कहा- 'मनुर्भव'।

यद्यपि 'मनुर्भव' कहने से ही सब बात आ गई, किन्तु भगवती श्रुति उसके उपाय भी बता देती है। वैसे तो सारा वेद ही नर-तनधारी को मनुष्य बनाने के लिए है, किन्तु इस मन्त्र में जो कुछ कहा है, उस पर भी यदि आचरण किया जाए तो अभीष्ट सिद्ध हो जाए।

मनुष्य बनने का पहला साधन- 'तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि'। संसार का ताना-बाना बुनता हुआ भी तू प्रकाश का अनुसरण कर, अर्थात् तेरे समस्त कर्म ज्ञानमूलक होने चाहिएँ। अज्ञान, अन्धकार तो मृत्यु के प्रतिनिधि हैं। अन्धकार से उल्लू को प्रीति हो सकती है, मनुष्य को नहीं। मनुष्य बनने के लिए अन्धकार से परे हटना होगा। ऋषि ठीक ही कहते हैं-

तमसो मा ज्योतिर्गमय ! [शत० १४।३।१।३०]=अन्धकार से हटाकर मुझे प्रकाश प्राप्त करा।

अन्धकार में कुछ नहीं सूझता, सब क्रियाएँ, चेष्टाएँ रुक जाती हैं, अतः वेद कहता है- भानुमन्विहि-प्रकाश के पीछे चल।

प्रकाश का अनुसरण करना मात्र ही पर्याप्त नहीं है, कुछ और भी आवश्यक होता है। प्रकाश के पीछे तभी चला जा सकता है जब प्रकाश स्थिर हो। यदि प्रकाश विद्युच्छटा के समान चञ्चल हो तो उसका अनुसरण कैसे हो सकता है ! इस आशय को लेकर वेद ने दूसरा उपाय बतलाया-

'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्'-प्रकाश के मार्गों की रक्षा कर, उनमें अपनी बुद्धि से परिष्कार कर।

संसार के सभी देशों में रौशनी बुझाने वालों के लिए दण्ड का विधान है, किन्तु संसार की गति अत्यन्त विचित्र है। संसार में ऐसे भी हुए हैं और कदाचित् आज भी ऐसे मनुष्याकारधारी प्राणी हैं, जो प्रकाश का नाश करते रहे और कर रहे हैं। उन्हें क्या कहोगे, जिन्होंने सिकन्दरिया का विशाल पुस्तकालय जला दिया ? उन्हें क्या कहोगे जो वर्षों भारत के ज्ञानभण्डार से हमाम=स्नानागार गरम करते रहे ? उनका क्या नाम धरोगे जिन्होंने चित्रकूट का करोड़ों रुपयों का पुस्तकालय अग्निदेव की भेंट कर डाला ? ये सब नर-तनधारी थे, किन्तु क्या ये मनुष्य नाम के भी अधिकारी थे, इसमें सन्देह है। मनुष्य बनाने का साधन नष्ट करने वाले मनुष्य कैसे ? वे कोई मनुष्यता के वैरी थे। उनको क्या कहोगे जो आज भी ज्ञानभण्डार को जल देवता के अर्पण कर रहे हैं ? उनको क्या कहोगे, जो प्रकाश को दूसरों तक नहीं जाने देते, अपने तक रोक रखते हैं ? ये सब.... लाखों ज्ञानी ज्ञान अपने साथ ले-जाते हैं। वह ज्ञान किस काम का ? वेद कहता है- 'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष'-ज्ञान मार्गों की रक्षा कर।

((स्वाध्याय संदोह से साभार) क्रमशः

वर्ष 2017 के नए कैलेण्डर मंगवाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, चौक किशनपुरा जालन्धर द्वारा प्रति वर्ष हजारों की संख्या में नव वर्ष के कैलेण्डर महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ देसी तिथियों सहित छपवाए जाते हैं। गत कई वर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध करवा रही है। इसी प्रकार सन् 2017के महर्षि दयानन्द सरस्वती के चित्र वाले कैलेण्डर भी आधे मूल्य पर आर्य जनता को दिए जाएंगे। पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कैलेण्डर का मूल्य चार रुपये प्रति तथा 400 रुपए सैकड़ा रखा गया है। इसलिये सभी आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएं व आर्य बन्धु शीघ्र अति शीघ्र कैलेण्डर सभा कार्यालय से मंगवा कर अपने सदस्यों व इष्ट मित्रों में वितरित करें। कार्यालय का समय प्रातः 10.00 बजे से सायं 5 बजे तक है। रविवार को अवकाश रहता है इसलिये समय पर अपना व्यक्ति भेज कर कैलेण्डर मंगवाएं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

लौह पुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

-ले० स्वामी सदानन्द जी दयानन्द मठ दीनानगर

जन्म-महर्षि दयानन्द 1876 ईस्वी में पंजाब आए। उनके शुभागमन से इस वीर भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। नवजागरण की इस शुभ वेला में सरदार भगवान सिंह के घर पौष मास विक्रम संवत् 1934 की पूर्णिमा को बालक केहर सिंह ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के नाम से विख्यात हुआ। लुधियाना जिला ने राष्ट्र को कई विभूतियां दी हैं। राष्ट्रवीर लाजपतराय, यशस्वी दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिब्राजक भी इसी की देन थे। इस जिले के मोही ग्राम में जन्म लेकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने इसे गौरवान्वित किया। श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगड़ी भी इसी जिले के हैं।

परिवार-बालक केहर सिंह के पूर्वज हल्दी घाटी से आकर यहां बसे थे। उनकी रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था। वीरभूमि पंजाब के वातावरण में पल कर केहर सिंह यथा नाम तथा गुण बन गये। सरदार भगवान सिंह जी की पत्नी का देहान्त हो गया इसलिए केहर सिंह का लालन-पालन उनके ननिहाल कस्बा लताला में हुआ।

आर्य समाज का परिचय-लताला में श्री पं० बिशनदास जी उदासी महात्मा से वैद्यक पढ़ते रहे। इन्हीं पण्डित जी के सत्संग से वैदिक धर्म के संस्कार विचार मिले और इन्हीं महात्मा जी के डेरे पर महात्माओं के सत्संग से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का संकल्प करके विरक्त हो गये।

गृहत्याग और संन्यास-पिता जी की चाह थी कि वह सेना में जनरल कर्नल बनें परन्तु केहर सिंह वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बन गये। धर्मशास्त्रों का पठन पाठन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्ष केवल कौपीनधारी रहे। आर्य समाज के नेताओं व विद्वानों में सर्वप्रथम आपने ही (1957 विक्रम) संन्यास लिया।

संन्यास लेकर आप 3-4 वर्ष के लिए दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों में धर्म प्रचार करते रहे। इसके लिए किसी सभा संस्था से आपने कोई आर्थिक सहायता नहीं ली।

स्वदेश लौटे तो पं० बिशनदास जी की आज्ञा से विधिवत आर्य समाज के कार्य में जुट गए। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए कई वर्ष रामामण्डी को केन्द्र बनाकर कार्य किया। फिर लुधियाना को केन्द्र बना लिया आपके तप, तेज व त्याग से सारा पंजाब प्रभावित हुआ।

पुन: विदेश यात्रा-1914 ई० में आप मारीशस में वेद प्रचार के लिए गये। तीन वर्ष तक आपने वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा। भारत के राष्ट्रीय हितों की वहां रक्षा की। राष्ट्रभाषा का प्रचार किया। जनता का नैतिक उत्थान तथा चरित्र निर्माण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम में-1916 ई० में स्वदेश लौट कर आर्य समाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। 1919 ई० में मार्शल ला के दिनों में पण्डित मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा पर आपने कांग्रेस को विशेष सहयोग दिया। 1920 ई० में बर्मा गये। वहां धर्म प्रचार के साथ स्वराज्य का प्रचार किया। माण्डले की ईदगाह से 25000 के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का खुल्लम खुल्ला प्रचार किया। अंग्रेज सरकार की आंख में आप कांटे की भांति चुभने लगे।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी देश के एकमेव संन्यासी थे जिन्हें सेना में विद्रोह फैलाने, सुभाषचन्द्र जी बोस की सेना पर गोली न चलाने की प्रेरणा देने के लिये शाही किले लाहौर में बन्दी बनाकर यातनायें दी गई। जब वीर भगतसिंह व उनके साथियों ने काल कोठरी में अनशन किया तो लाहौर में उनके समर्थन में भारी सभा की गई। उस सभा की अध्यक्षता के लिये कोई आर्यवीर चाहिये था। सब देशभक्तों की दृष्टि स्वतन्त्रानन्द जी पर पड़ी। शूरता की शान हमारे स्वामी जी ने अध्यक्षीय भाषण में एक ऐसी हुँकार भरी कि अगले रविवार समाज मन्दिर जाते हुए उन्हें बन्दी बना लिया गया। पूज्य महाराज के हाथों को हथकड़ी न लग सकी तो दो हथकड़ियों को जोड़कर उनको बन्दी बनाया गया। पंजाब के गवर्नर की हत्या का षड्यन्त्र रचने का भयंकर केस भी चलाया गया।

काल कोठरी में-1930 ई० में पंजाब कांग्रेस के सब नेता जब जेलों में बन्द थे तो आपने सत्याग्रह को चलाया। डा० मुहम्मद आलम के जेल जाने पर आप कुछ समय के लिए प्रदेश कांग्रेस के प्रधान भी बनाए गये।

1930 ई० में लाहौर में कांग्रेस की एक प्रचण्ड सभा से अध्यक्ष पद से एक भाषण देने पर आपको बन्दी बना लिया गया। आपकी गतिविधियों के कारण श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय की सरकार ने तलाशी ली। स्वराज्य संग्राम में केवल आर्य समाज के उपदेशक विद्यालय (Missionary College) की ही तलाशी ली गई।

सेना में विद्रोह का आरोप-1942 ई० में भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रचार कर रहे थे कि आपने भापड़ौदा कस्बा हरियाणा में एक बैठक बुलाकार हरियाणा के चौधरियों से कहा कि सेना में कार्य करने वाले अपने पुत्रों तथा सगे सम्बन्धियों से आप कहें कि सत्याग्रहियों पर गोली मत चलाएं। आप की हरियाणा यात्रा का अपूर्व प्रभाव पड़ा। सरकार यह सहन न कर सकी। वायसराय के विशेष आदेश से आप को शाही किला लाहौर में बन्द करके अमानुषिक यातनाएं दी गई। किला से छोड़े गए तो विश्व युद्ध की समाप्ति तक दीनानगर में नजरबन्द किए गए। आप पर कई प्रतिबन्ध लगाए गए। जब आप शाही किला में बन्दी बनाए गए तो पंजाब के गवर्नर के वध का षड्यन्त्र करने का भी आरोप लगाया गया।

क्रांतिकारियों को शरण-आप दस वर्ष श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद पर आसीन रहे और सैंकड़ों योग्य शिष्य आर्य समाज को प्रदान किये जो उनके चरण चिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज का प्रचार कर रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिष्ठाता वेद प्रचार का कार्यभार भी आपके कन्धों पर था। तब आपने समय-समय पर कई भूमिगत क्रांतिकारियों को लाहौर में शरण दी।

1938 ई० में दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना करके इसे मानव केन्द्र बनाया। धर्म प्रचार संस्कृत प्रसार का तो यह केन्द्र ही है। सहस्त्रों रोगी प्रतिदिन यहां धर्मार्थ औषाधालय से चिकित्सा करवाते हैं। इस आश्रम में भी देश के स्वतन्त्र होने तक कई क्रांतिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर शरण पाते रहे, महात्मा गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के लिए स्वामी स्वतन्त्रता नन्द जी महाराज के सुशिष्य यति जी को विशेष रूप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी थी। उस समय उनके सुयोग्य उत्तराधिकारी पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज इस मठ के अध्यक्ष थे।

नवाबों से टक्कर-आपने मालेरकोटला, लोहारू व निजाम हैदराबाद के विरूद्ध सफल मोर्चे लगाकर जन अधिकारों की रक्षा की। आपके सफल व कुशल नेतृत्व से आर्य समाज को अपूर्व विजय प्राप्त हुई। महात्मा गांधी आदि नेता भी आपकी कार्यक्षमता से अत्यन्त प्रभावित हुए। इन संघर्षों से स्वराज्य आन्दोलन की गति तीव्र हुई।

लहूलुहान-लुहारू में तो आप पर कुल्हाड़ों व लाठियों से प्राण घातक प्रहार किये गये। आजन्म ब्रह्मचारी 65 वर्ष की आयु में इन भयंकर प्रहारों में भी अडिग खड़े रहे। आप के सिर पर इन घावों के इक्कीस चिन्ह थे। एक तो बहुत बड़ा निशान दूर से ही दिख जाता था।

विदेशों में राष्ट्रीय दूत-प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात भी एक बार आप पूर्वी अफ्रीका में आर्य समाज के प्रचार के लिए गए। देश स्वतन्त्र हुआ तो भारत सरकार की विशेष प्रार्थना पर आप पूर्वी अफ्रीका व मारीशस की यात्रा पर गये। आप ने इन देशों में रहने वाले भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक अवस्था का अध्ययन किया और विदेशों में भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया। मारीशस की स्वतन्त्रता के लिए आपने मार्ग प्रशस्त करने के लिए बड़ा काम किया।

बहुमुखी प्रतिभा-तेजस्वी व्यक्तित्व-अस्पृश्यता निवारण व दलितोद्धार के लिए आपने

(शेष पृष्ठ 6 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

12 जनवरी जन्मदिवस पर विशेष

शूरता की शान-स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

शूरता की शान, लौह पुरूष के नाम से विख्यात स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्य जगत् के कर्मठ योद्धा थे। वे वीतराग सन्यासी होते हुए भी आर्य समाज के कर्मठ सेनानी थे। जिन पुण्यात्माओं को जन्म देकर यह भारत भूमि धन्य हो गई है, उन पुण्यात्माओं में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज भी एक थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म विक्रम सम्वत् 1934 के पौष मास की पूर्णिमा को मोही ग्राम जिला लुधियाना में एक प्रतिष्ठित सिख जाट परिवार में हुआ था। बालक केहरसिंह का जन्म सन् 1877 ई. में उस समय हुआ जब महर्षि दयानन्द जी महाराज वेद ज्ञान की अमृत धारा को प्रवाहित करते हुए लुधियाना नगर पधारे। उस समय कौन जानता था कि यह बालक बड़ा होकर महर्षि दयानन्द का अनुयायी बनकर अपना जीवन अर्पण कर देगा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन त्याग, तप, सरलता और संयम का प्रतीक था। उनकी करनी और कथनी में भेद नहीं था। उनका व्यक्तिगत जीवन सामान्य व्यक्तियों के लिए ही नहीं अपितु त्यागी, तपस्वी महात्माओं के लिए भी अनुकरणीय जीवन था। वैसे भी लुधियाना को यह गौरव प्राप्त है कि इसने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के यशस्वी सेनापति लाला लाजपतराय को जन्म दिया था। शास्त्रार्थ समर के अजेय योद्धा स्वामी दर्शनानन्द जी को जन्म देने का श्रेय भी इसी जिले को प्राप्त है। पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्य समाज के लौहपुरूष थे। इनका जन्म सिक्ख परिवार में हुआ था। स्वामी जी के जन्म के समय ऋषिवर दयानन्द जी ने वैदिक धर्म की दुन्दुभि पंजाब में बजाई थी। उस वैदिक धर्म के जयघोष का असर लुधियाना पर विशेष रूप से पड़ा और लुधियाना जिले ने बहुत से धार्मिक नेता, समाजिक नेता समाज को दिये। उसी कड़ी में एक बाल ब्रह्मचारी केहर सिंह अपने माता-पिता की गोद में पल रहा था।

बालक केहर सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम व ननिहाल में हुई। अपने ननिहाल में रहते हुए केहर सिंह वहां के प्रसिद्ध उदासीन साधुओं के डेरे में आते जाते थे। डेरा के महन्त पं. विशनदास की प्रेरणा से उन्होंने ने संस्कृत पढ़ी। पं. विशनदास जी महर्षि दयानन्द जी के विचारों से काफी प्रभावित थे। पं. विशनदास जी के सत्संग से केहर सिंह पर भी वैदिक धर्म का रंग चढ़ गया। इन्होंने आयुर्वेद तथा युनानी चिकित्सा का भी अध्ययन किया हुआ था। पिता जी चाहते थे कि केहर सिंह को सेना में जरनैल बनाएं परन्तु केहर सिंह ने गृहस्थी के चक्कर में न पडकर देश और धर्म की सेवा करने का दृढ निश्चय कर लिया था। इस नौजवान को किसी प्रकार कोई मोह एवं मत-मतान्तर घर में बांध न सका और भरी जवानी में जो बचपन में वैदिक धर्म का नाद कानों में पडा था उस वैदिक धर्म की रक्षा के लिए देश, जाति और धर्म की ढाल बनने के लिए आर्य समाज रूपी युद्ध में कूद पडा। इतिहास इस बात का गवाह है कि जब-जब भी जहां-जहां भी आर्य समाज में आन-बान और शान के लिए जरूरत पड़ी वहां पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सबसे आगे आए।

जब 1925 ई. में मथुरा में महर्षि जी की जन्म शताब्दी मनाई गई तो वहां पर पूज्य स्वामी जी ने व्याख्यान दिया और कहा कि हम कितना भी आर्य समाज के लिए कार्य करें पर महर्षि दयानन्द जी के ऋण से उऋण नहीं हो सकते । इसी अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा ने निर्णय लिया कि एक उपदेशक विद्यालय खोलना चाहिए। यह प्रस्ताव पारित हो गया। लाहौर में श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय खुला। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज इस उपदेशक विद्यालय के दस वर्ष तक आचार्य रहे। विद्यालय से कोई भी पैसा अपने उपर खर्च नहीं करते थे और भिक्षाटन करके अपना काम चलाते थे। सन् 1938 में दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की। यह मठ आर्य समाज का केन्द्र बन गया। जब आन्ध्रप्रदेश में हैदराबाद के नबाव ने हिन्दुओं और आर्य भाईयों पर अत्याचार करना शुरू किया तो आर्यों ने सत्याग्रह शुरू किया। वहां पर कोई हिन्दु या आर्य अपने मन्दिरों में पूजापाठ या हवन यज्ञ नहीं कर सकते थे। इसलिए आर्य समाज ने सत्याग्रह शुरू कर दिया। सत्याग्रह का संचालन पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को सौंपा गया। हैदराबाद का नबाव धन और वैभव से सम्पन्न था उससे लोहा लेना कोई आसान काम नहीं था। जब स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और नारायण स्वामी जी हैदराबाद में सत्याग्रह के लिए पहुंचे तो वहां के लोग कहने लगे कि आप कैसे नबाव से टक्कर ले सकते हैं। उसी हैदराबाद में नबाव की कोठी में वैदिक धर्म के जयघोष से आकाश गुंजायमान हुआ। वहां के नबाव ने आर्य समाज के आगे घुटने टेक दिए। जब भारतवर्ष आजाद हुआ तो सारी रियासतें भारतवर्ष में मिल गई पर हैदराबाद का नबाव भारतवर्ष में मिलना नहीं चाहता था पर वहां गृहमन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने जाकर रातों रात नबाव के हस्ताक्षर करवाकर भारतवर्ष में मिला लिया। सरदार पटेल ने कहा था कि मैंने तो कुछ नहीं किया मेरे से पहले ही आर्य समाज ने नबाव की कमर तोड़ दी थी।

इस वर्ष 12 जनवरी को लौह पुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्मदिवस आ रहा है। पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जीवन अत्यन्त प्रेरणाप्रद है। वे एक आदर्श साधु, दूरदर्शी, कर्मठ व त्यागी नेता थे। वे एक गम्भीर विद्वान, इतिहासवेत्ता व वीर सेनापति थे। जहां पर भी अपने धर्म एवं संस्कृति पर संकट के बादल आए वहां पर स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी संकटमोचक बनकर खड़े हुए। ऐसे पूजनीय महापुरूष से उनके जन्मदिवस पर हम प्रेरणा लें। स्वामी जी के गुणों को धारण करके हम आर्य समाज की उन्नति के लिए कार्य करें और आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाएं। आज स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन वीरता एवं साहस, त्याग एवं बलिदान, देश एवं धर्म भक्ति का जो पथ उन्होंने प्रशस्त किया है वह अनन्त काल तक सारे संसार को [illegible] देता रहेगा।

-प्रेम भारद्वाज, संपादक एवं महामन्त्री

www.thearyasamaj.org

पाश्चात्य तथा वैदिक संस्कृति

-ले० वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, रामजस कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

(गतांक से आगे)

हमारे मन का निर्माण भी हमारे भोजन के सूक्ष्मांश से होता है। कहा भी है-जैसा खाएं अन्न, वैसा बने मन। इसीलिए वैदिक संस्कृति में हिंसा आदि दोषों से शून्य शुद्ध पवित्र सात्विक भोजन करने का विधान किया गया है। पाश्चात्य परम्परा में ऐसा कोई नियम नहीं है क्योंकि पहले तो वहां आत्मा तथा मन की सत्ता ही स्वीकार नहीं की जाती। यदि की भी जाती है तो भोजन का सम्बन्ध शरीर मात्र के पोषण तथा स्वाद से माना जाता है, मन से नहीं। इसीलिए उनके भोजन में मांस-शराब आदि की प्रचुरता दिखाई देती है। अभी कुछ दिन पहले तथाकथित विचारशील लोगों की ओर से कहा गया था कि हमें कीड़े-मकौड़ों को भी भोजन का अंग बनाना चाहिए। इससे एक तो खाद्य समस्या हल होगी तथा दूसरे कीड़े-मकौड़ों से होने वाली हानियों से हम मुक्त हो जायेंगे। हे सर्वभक्षी सभ्य मानव ! तू कहां जा रहा है। सम्भवत: ऐसी स्थिति का अनुमान लगाकर ही महर्षि दयानन्द ने लिखा था-हे मांसाहारियो ! कुछ काल के पश्चात् जब पशु न रहेंगे, तब तुम मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे या नहीं ? ऐसी स्थिति अब आ गई है। छिप-छिपाकर मनुष्य मांस का प्रयोग तो होटलों आदि में पर्याप्त समय से हो रहा है। अब कीड़े-मकौड़े भी खाये जायेंगे, यह है पाश्चात्य भोजन शैली।

7. अन्त्येष्टि-भारतीय परम्परा में अन्त्येष्टि को भी एक संस्कार माना गया है तथा इसके लिए शास्त्रीय विधि विधान भी है। मृत शरीर के प्रति भी पूर्ण श्रद्धा, सम्मान तथा प्रेम प्रकट करके शोकायुक्त मन से उसकी अन्त्येष्टि की जाती है। इसके विपरीत विदेशों में मृत्यु होने पर मृत शरीर को पैक करके रख दिया जाता है तथा केवल शनिवार तथा रविवार के दिन ही उसे विद्युत शव दाह में अग्नि की भेंट किया जाता है क्योंकि अति व्यस्त पाश्चात्य जीवन शैली में प्रतिदिन अन्त्येष्टि करने का समय आज के मानव के पास नहीं है तथा न ही उन्हें मृत शरीर के साथ कोई सहानुभूति, प्रेम या संवेदना है। भारत में मरने पर भी मृत व्यक्ति की आत्मा को अमर मानकर मृत्यु के उपरान्त भी श्राद्ध किया जाता है। यद्यपि यह अनैतिक परम्परा है, तथापि इससे मृत व्यक्ति के साथ तादात्म्य तो प्रदर्शित होता ही है। विदेशी संस्कृति जब आत्मा की सत्ता ही स्वीकार नहीं करती तो मृत्यु होने पर मृत के साथ कैसा सम्बन्ध ?

वस्तुत: विदेशों में शव को भूमि में गाड़ने की प्रथा थी, जलाने की नहीं। जबकि वैदिक विधि शव को चिता में भस्म करना ही है। महारानी विक्टोरिया के सर्जन हैलरी थोम्बसन ने 1874 में सर्व प्रथम यह विचार प्रकट किया कि शव को गाड़ने की अपेक्षा जलाना श्रेष्ठ है। इसके लिए उन्होंने एक पुस्तक भी लिखी, 'Cremation the treatment of the body after Death' अर्थात् दाहकर्म मृत्यु के पश्चात् शरीर का उपयुक्त उपाय। इन विचारों का ईसाई जगत में पर्याप्त विरोध हुआ, किन्तु थौम्पसन ने हार नहीं मानी तथा उन्होंने 13-1-1874 को इंग्लैण्ड में Cremation Society of England नामक संस्था बनाई। 1902 में इंग्लैण्ड में शवदाह विषयक एक्ट भी पास किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध में अधिकांश व्यक्तियों के मरने पर उनका दाह कर्म ही किया गया। इसकी देखादेखी यूरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड आदि देशों में भी दाह संस्थायें बनाई गईं।

8. अन्य संस्कार-वस्तुत: वैदिक संस्कृति संस्कारों पर ही आधारित है। विश्वभर में अकेली वैदिक संस्कृति ही ऐसी अद्भुत है कि जहां जन्म से पूर्व ही बच्चे को सुसंस्कृत करने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी जाती है तथा इसी का नाम गर्भाधान संस्कार है। इसके पश्चात् भी पुंसवन, सीमन्तोन्नयन तथा जातकर्म संस्कार किये जाते हैं। इसके पश्चात् अन्य संस्कार भी बच्चे को शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक दृष्टि से पूर्ण विकसित करने के लिए किये जाते हैं। पाश्चात्य प्रणाली में न आत्मा की सत्ता है, न मन की। अत: उनको सुसंस्कृत करने का प्रश्न ही वहां नहीं है। वह संस्कृति केवल शरीर को लक्ष्य में रखकर कार्य करती है जबकि वैदिक संस्कृति में शरीर, आत्मा, मन तथा बुद्धि इन चारों का ही विकास अभिप्रेत है। संस्कारों का विधान इन चारों को समुन्नत करने के लिए ही किया गया है। वैदिक संस्कृति के प्रभाव से अन्य मत मतान्तरों में कुछ संस्कारों का प्रयत्न विभिन्न रूपों में हैं किन्तु जितनी वैज्ञानिक तथा तर्कसंगत प्रक्रिया वैदिक संस्कृति में इन संस्कारों की है, वैसी संसार भर में कहीं भी नहीं है।

9. आदर्श-प्रत्येक देश तथा संस्कृति में कुछ आदर्श पुरुष होते हैं जिनके मार्ग पर उस देश के निवासी चलते हैं। यथा भारतवर्ष में भगवान् राम, श्रीकृष्णआदि को आदर्श पुरुष मानकर उनके अनुगमन पर गर्व किया जाता है। यह बात अलग है कि वर्तमान सरकार ने न्यायालय में शपथ पत्र देकर भगवान् राम के अस्तित्व को ही नकार दिया था क्योंकि उसे राम सेतु का विध्वंस करना था। न केवल भारत में ही अपितु जावा, सुमात्रा, इण्डोनेशिया आदि अनेक देशों में राम को आदर्श मानकर उसके चरित्र की पूजा की जाती है। विदेशों में उल्टी बात है। इटली के पन्द्रहवीं शताब्दी के कूटनीतिज्ञ मैकावली ने अपने देश के सीजर वोर्जिया को आदर्श पुरुष बतलाया है। जर्मन दार्शनिक निट्स ने भी सीजर को आदर्श पुरुष मानते हुए आशा प्रकट की कि जर्मन पुरुष उसके अनुरूप ही होंगे। सीजर अपने समय का सबसे घृणित तथा पतित व्यक्ति था। उसने अपने भाई की हत्या करायी, एक महिला के सतीत्व को नष्ट किया तथा अपनी माता के अपमान का बदला लेने के लिए निर्दोष स्विस जनता का कत्लेआम कराया। वह विष की उपयोगिता में विश्वास रखता था तथा विजय की चिन्ता में उचित अनुचित का भी ध्यान नहीं रखता था। मैकावली तथा निट्स किसी व्यक्ति के आदर्श होने के लिए उसमें भौतिक बल, कूटनीति, साम्राज्य लोलुपता तथा नृशंसता को आवश्यक मानते हैं। सीजर इन सभी गुणों से सम्पन्न होने के कारण इनका आदर्श पुरुष बना जबकि भगवान् राम मर्यादा पुरुषोत्तम होने के कारण संसार के आदर्श बने।

10. लक्ष्य-वैदिक संस्कृति का लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष नामक चार पुरुषार्थों की प्राप्ति करना है। यह भी ध्यातव्य है कि इन सभी का सेवन युवावस्था से ही करना चाहिए। इन चारों के मूल में धर्म है तथा ऊपर का आवरण मोक्ष है। धर्म तथा मोक्ष के अन्दर रहकर ही हमें अर्थ तथा काम का उपार्जन करना चाहिए। वैदिक संस्कृति आत्मा को अजर-अमर कर्मफल का भोक्ता तथा अपने कर्मानुसार पुन: जन्म लेने वाला मानकर चली है। वैदिक संस्कृति का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष है। अन्य तीन पुरुषार्थ इसी के सहायक हैं। यहां धन को उतना महत्व नहीं दिया गया जितना कि धर्म तथा मोक्ष को। वृहदारण्यकोपनिषद् का एक संवाद यहां उद्धृत करने योग्य है। वहां पर मैत्रेयी अपने पति याज्ञवल्क्य ऋषि से पूछती है कि यदि सम्पूर्ण पृथिवी भी धन धान्य से पूर्ण रूप से मुझे मिल जाए तो क्या मैं उससे मोक्ष को प्राप्त कर लूंगी। याज्ञवल्क्य इसका सपाट सा उत्तर दे देते हैं कि 'अमृतत्वस्व तु नाऽऽशाऽस्ति वित्तेन' अर्थात् धन के आधार पर मोक्ष की आशा भी नहीं की जा सकती, प्राप्ति की तो बात ही क्या है।

पाश्चात्य संस्कृति का लक्ष्य केवल अर्थ तथा काम है। धर्म यहां गौण है तथा मोक्ष का तो नाम ही नहीं। यद्यपि विदेशों में ईसाई धर्म आदि के नाम से मत-मतान्तर हैं किन्तु इससे उनका उद्देश्य ईसा पर ईमान लाकर बाईबल नामक पुस्तक से जुड़ना मात्र है। वे ईसाइयत को विश्वभर में फैलाना भी चाहते हैं किन्तु धर्म को समझे बिना ही। भारत में धर्म की एक सुनिश्चित परिभाषा है। कणाद मुनि कहते हैं-

'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस्सिद्धिः स धर्मः।'

अर्थात् जिससे सांसारिक उन्नति तथा मोक्ष की सिद्धि हो वही धर्म है। आत्मा की सत्ता, उसका पुनर्जन्म तथा मोक्ष का विदेशी संस्कृति में कोई स्थान नहीं है। वे न्याय, दया, परोपकार आदि को नैतिक गुण मानकर इनका पालन करते हैं, जबकि भारतीय इन्हें धर्म समझते हैं तथा विश्वास करते हैं कि मृत्यु के उपरान्त भी यह धर्म जीव के साथ जायेगा। विदेशी संस्कृति शरीर को ही प्रमुख मानती है, अत: इसका पोषण सुख तथा मौज मस्ती ही उसका उद्देश्य है। खेद है कि आज यही पाश्चात्य संस्कृति भारत में तीव्रता से फैलती जा रही है। वर्तमान अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के कारण ऐसा हुआ है।

www.thearyasamaj.org

प्राप्तं प्राणीयं

-ले० यश वर्मा (मन्त्री) आर्य समाज, मॉडल टाऊन, यमुनानगर

योगदर्शन का एक सूत्र है :

प्राप्तं प्रापणीयं, क्षीणः क्षेतव्याः, क्लेशाः, छिन्नः शिलष्टपर्वा भवसंक्रमा।।1.26।।

इस सूत्र के जो पहले दो शब्द हैं, विशेष ध्यान देने योग्य हैं। **प्राप्तं** अर्थात् प्राप्त करना है, किसे, **प्रापणीयं** जो प्राप्त करने के योग्य है। कौन है वो जो हमारे प्राप्त करने के योग्य है ? वह है परमेश्वर! लेकिन परमेश्वर ने तो जब मनुष्य को बनाया तो उसके साथ इच्छाओं का अम्बार लगा के संसार में भेज दिया। एक इच्छा पूर्ण होती है तो दूसरी इच्छा उत्पन्न हो जाती है, दूसरी के बाद तीसरी चौथा..........।

एक बात तो अवश्य है कि यदि इच्छा ही न हो तो जीवन जीने का आधार ही समाप्त हो जाए। सभी इच्छा पूर्ति के लिए ही तो कार्य कर रहे हैं। जो जितना पुरूषार्थ करता है, उतना पा लेता है। यदि सफल होना है, तो चार चीजें आवश्यक हैं। पहला, अत्यन्त पुरूषार्थ, अर्थात् इतना अधिक पुरूषार्थ कि जिसमें कोई न्यूनता नहीं है। जब मनुष्य पुरूषार्थ करता है तो कई बाधाएँ, समस्याएँ, कठिनाईयाँ, विपत्तियाँ भी आती हैं। ऐसी स्थिति में जो उनका सहनशीलता से, बिना घबराए, उनका सामना करता हुआ, समाधान कर लेता है तो वह **घोर तप** की श्रेणी में आ जाता है। इनके साथ-साथ **उत्तम विधि** भी आवश्यक है, उत्तम विधि जब तक नहीं होगी, सफलता जितनी मिलनी चाहिए वह नहीं मिलेगी। इन तीनों के साथ अनुकूल साधनों को भी अपनाना होगा। इन सभी साधनों को अपना कर कोई डॉक्टर, इंजीनियर, आर्डीटर, अधिकारी, उद्योगपति, व्यापारी, कर्मचारी, खिलाड़ी, नेता अभिनेता कुछ भी बन जाता है। इन उपलब्धियों को प्राप्त कर लेना क्या उचित-यथार्थ होता है। यदि यथार्थ होता तो उसको तृप्ति, संतोष, निर्भयता, स्वतन्त्रता सुख हाथ लगता। परन्तु वास्तव में ऐसा होता तो नहीं है।

बहुत सारे लोग तो यहाँ तक भी कह देते हैं कि परमात्मा ने पता नहीं यह संसार हमें दुख देने के लिए क्यों बना दिया। ऐसा कहने के पीछे उनका ज्ञान कार्य करता है। उन्हें सही जानकारी नहीं है। जो अज्ञानी मनुष्य होता है वह दूसरों को दुःख देता है। फिर ईश्वर तो सर्वज्ञ और न्यायकारी है, वह कैसे किसी को दुःख दे सकता है। कर्मों के अनुसार सुख-दुख मिलता है। हाँ यदि परमात्मा सृष्टि की रचना न करता तो आत्माएँ मूर्छित सी अवस्था में पड़ी रहती। आत्मा में ऐसा सामर्थ्य नहीं कि वह स्वयं अनुभूति कर सकती है अन्यथा तो ऐसे है जैसे कोई व्यक्ति कोमा में पड़ा हो। ईश्वर तो महा दयालु है जिसने हमें आनन्द अनुभव करने का अवसर प्रदान किया है। साथ में वेद के द्वारा यह शिक्षा भी दे दी कि किस प्रकार जीवन यापन करता है। केवल मनुष्य नहीं बनना यानि केवल शिक्षा प्राप्त करके सुख नहीं पाना बल्कि देव बनना है यानि विशेष शिक्षा प्राप्त करके आनन्द की प्राप्ति करनी है। जो देव है उसमें दया, सत्य, विनम्रता, मधुरता, आत्मीयता, न्यायकारिता आदि अनेक गुण आ जाते हैं।

वह ईश्वर तो हमारा परम मित्र है। हमारा हितैषी, प्रेरक है। कभी अन्याय नहीं करता। हमारी हर बात जानता है और कभी दूसरे को नहीं बताता। दुख सागर से बचाता है। इन्द्रियों के साथ वर्तमान कर्मों का कर्त्ता, भोक्ता जो जीव (आत्मा) है, इसका वही एक योग्य मित्र है अन्य कोई नहीं ; क्योंकि ईश्वर जीव का अन्तर्यामी है। हम अच्छा या बुरा मन से प्रारम्भ करते हैं। यदि हम ईश्वर को मित्र बना लेते हैं तो वह हमें प्रेरणा देता रहता है और हम मान लेते हैं। जो उसे मित्र नहीं बनाता, ईश्वर प्रेरणा तो उसे भी देता है पर वह उसे मानता ही नहीं है।

प्रभु ने मनुष्य जन्म दिया है सांसारिक सुख व पूर्ण आनन्द प्राप्त करने के लिए। लेकिन हम लोग इस संसार में आते ही, संसार के लोगों को देखते व समझते ही भौतिक सुखों की ओर झुक जाते हैं। सारा पुरूषार्थ इसी ओर लगा देते हैं। सुख तो पा लेते हैं परन्तु आनन्द का पहलू अछूता रह जाता है।

जहाँ सुख है वहाँ दुख भी है। सुख दुख सदा साथ-साथ रहते हैं। हाँ, मात्रा घटती बढ़ती रहती है। कभी सुख अधिक है तो कभी दुख अधिक है। जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है और साथ में सुख दुख का चक्र भी चलता रहता है। मनुष्य जन्म के पश्चात कर्मानुसार बहुत सी भोग योनियों में भी जाना पड़ता है जहाँ दुख बहुत अधिक है।

इसलिए हमें **कृतकृत्य** को समझना है। कृत का अर्थ 'किया' और कृत्य का अर्थ 'करने योग्य'। अभिप्राय : यह है कि जो जो करने योग्य है। अब प्रश्न है कि करने योग्य क्या है। **क्षीणाः क्षेतव्या क्लेशाः** अर्थात् जो पाँच क्लेश हैं उनको नष्ट करना है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश, पाँच क्लेश हैं। इन पांचो में भी मुख्य है **अविद्या,** हम तो कहते हैं, हम तो बहुत पढ़े-लिखें है। हमारे में तो बहुत विद्या है। अच्छा तो बताओ कि आप जानते हो नित्य-अनित्य, शुचि-अशुचि, सुख-दुख, आत्मा-अनात्मा के बारे में, केवल शब्दों के द्वारा नहीं, अनुभव करके बताओ। नहीं हुआ न अनुभव। अत्यन्त पुरूषार्थ करना पड़ेगा अविद्या दूर करने में, फिर आपकी अस्मिता अर्थात् आत्मा, मन, बुद्धि, शरीर को एक समझना, राग, द्वेष और अभिनिवेश अर्थात् मृत्यु का भय, यह चारों क्लेश भी दूर हो जाऐंगें। जब ये क्लेश दूर होंगे तभी **शिलष्टपर्वा भवसंक्रमः** अर्थात् बार-बार जन्म-मरण की कड़ियों से जकड़ी हुई संसार बन्धन रूपी जंजीर को छिन्न अर्थात् नष्ट कर पांएगे। ऐसा तो कोई आध्यात्मिक व्यक्ति ही कर सकता है।

शब्द ज्ञान तो अच्छा है, बिना शब्द ज्ञान के गाड़ी नहीं चलेगी क्योंकि किसी चीज़ के बारे में पता ही नहीं होगा तो वह कार्य कैसे होगा। जैसे व्यायाम करना अच्छा है, परन्तु लाभ तो तभी होगा जब कोई व्यवहार में लाएगा अर्थात् व्यायाम करेगा। इसी प्रकार एक विद्वान जिसे मन्त्र आते थे, एक योगी/ऋषि के पास गया और कहा कि मैं पढ़ा तो बहुत हूँ पर जाना नहीं। तब ऋषि ने कहा कि तुम मन्त्रवित हो, आत्मवित बनो। **आत्मवित** वह है जो शब्दों के अर्थों को जानता भी है मानता भी है, अपनाता भी है, व्यवहार में लाकर लाभ भी उठाता है। आत्मवित वही बन सकता है जो आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि को दिन में कुछ समय के लिए अपनाता है और यह कार्य तो 2-3 घंटे से अधिक कोई नहीं कर पाता। 6-7 घंटे नींद में जाते हैं। शेष 14 घंटे जो कि व्यवहार काल के हैं उसमें मन, वाणी व शरीर से हिंसा नहीं करता, सत्य को समझकर उस पर अडिग रहता है, चोरी नहीं करता, कोई झूठा श्रेय नहीं लेता, शरीर के प्रत्येक अंग से ब्रह्मचर्य का पालन करता है, आवश्यकता से अधिक सामान इकट्ठा नहीं करता, मन की, विचारों की, आत्मा की, शरीर की शुद्धि रखता हैं, पूर्ण पुरूषार्थ के पश्चात जो मिल गया उसमें संतुष्ट रहता है, अपने कर्त्तव्य का पालन सहनशीलता व बिना घबराए कर पाता है, अच्छे शास्त्रों का व अपने कार्यों का स्वाध्याय करता है, सब कुछ ईश्वर को समर्पण भाव से करता है वह आत्मवित हो जाता है।

जो आत्मवित होता है, वह योगी बन जाता है। वह 'प्राप्तं प्रापणीयं' हो जाता है अर्थात् जो पाने योग्य परमेश्वर है उसे प्राप्त कर लेता हैं। आओ हम भी इस ओर अग्रसर हों ताकि हमें भी हमारे पुरूषार्थ अनुसार प्रभु अवश्य मिलेंगे और हमें भी पूर्ण आनन्द की प्राप्ति होगी।

ओ३म् शांति-शाति-शांति।

www.thearyasamaj.org

लोभ व संग्रह की प्रवृति के कारण लोग दुखी-सरला भारद्वाज

"लोगों में संग्रह की प्रवृत्ति व अति लोभ ही वर्तमान समय में लोगों के दुखों का मूल है। वेद धन कमाने की बात तो करता है, परन्तु अति लोभ से ग्रस्त होकर धन-सम्पत्ति का संग्रह करने की प्रवृत्ति का समर्थन नहीं करता।" यह उद्‌गार उपनिषदों की विदुषी, व ऐस डी. कालेज फार विमैन से रिटायर अध्यक्षा संस्कृत विभाग, तथा मानव संसाधन मंत्रालय से राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित डा. सरला भारद्वाज ने व्यक्त किए। वह यहां आर्य समाज गौशाला रोड़ फगवाड़ा द्वारा आयोजित वेद प्रचार दिवस के उपलक्ष में मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुई। उन्होंने कहा कि उपनिषदों में जीवन जीने के दो मार्ग बताए हैं- प्रेय मार्ग व श्रेय मार्ग। तथा प्रेय मार्ग की बनिस्वत श्रेय मार्ग पर चलने से ही जीव का कल्याण संभव होता है।

इससे पूर्व आर्य समाज की वरिष्ठ सदस्या नीलम चोपड़ा व आर्य माडल सी. सै. स्कूल की वाइस प्रिंसीपल मोनिका सभ्रवाल ने श्री मती भारद्वाज को सरोपा भेंट करके सम्मानित किया।

आर्य माडल सी. सै. स्कूल में स्वर्गीय मास्टर मनोहर लाल चोपड़ा जी ने स्मृति में आयोजित कार्यक्रम में सबसे पहले हवन यज्ञ किया गया। जिसमें श्रीमती सरला चोपड़ा, रणजीत सोंधी, रचना सोंधी, श्री मती एवं श्री आशु पुरी तथा राजेश खोसला यजमान के रूप में शामिल हुए। यजमानों को विद्वान मुख्य वक्ता ने सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां भेंट कीं।

हवन यज्ञ के उपरान्त आर्य समाज के अध्यक्ष प्रो० कैलाशनाथ भारद्वाज ने भजनोपदेशक अरुण वेदालंकार को सरोपा भेंट करके सम्मानित किया। अपने मधुर भजनों के माध्यम से अरुण वेदालंकार ने वेदों में यज्ञ की महिमा का व्याख्यान करते हुए बताया कि वेदों में माता-पिता व बुजुर्गों की सेवा करते हुए जीवन जीने की बात कही गई है। उन्होंने महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन चरित्र तथा स्वामी श्रद्धानंद जी के बलिदान के उपलक्ष्य में भजन गाकर उपस्थिति को खूब प्रभावित किया। अपने एक घंटे के भजनगायन में उन्होंने ईश्वर भक्ति के भजन गाकर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया।

लगभग 200 आर्य बन्धुओं की हाजरी को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज के महामंत्री डा. यश चोपड़ा ने साप्ताहिक आर्य मर्यादा को प्रति लहराते हुए बताया कि सृष्टि की आयु 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हज़ार 117 वर्ष है तथा सृष्टि के आदि में ही वेदों का परमात्मा की तरफ से उदय हुआ। बाद में वैदिक ऋषियों ने अपने ध्यान समाधि में अर्जित अनुभव के आधार पर उपनिषदों की रचना की। तथा जहां गीता को उपनिषदों का सार कहा जाता है। वहीं उपनिषदों को वेदों का सार कहा जा सकता है। और गीता का सार आत्म ज्ञान है। आज का मनुष्य अपने ही धर्मशास्त्रों से विमुख होकर आत्मा ज्ञान से वंचित होने के कारण भारी भरकन व दुखों से ग्रस्त जीवन जीने को मजबूर हो रहा है।

इस कार्यक्रम में सर्व श्री सुरिन्द्र चोपड़ा, नीलम पसरीचा, रमेश सचदेवा, मेयर अरूण खोसला, संजय ग्रोवर, हरिवंश मैहता, कीमती लाल शर्मा, अश्विनी तिवारी, मूलकीत सिंह रघबोत्रा, विवेक महाजन, प्रिंसीपल मीर महाजन, के. एल सोवती रमेश वर्मा, रमेश गुलाटी, राकेश सूद व रेणु चोपड़ा आदि विशेष तौर पर सम्मानित हुए। इस अवसर पर विधायक सोम प्रकाश भी खास तौर पर स्वर्गीय मनोहर लाल चोपड़ा को श्रद्धांजलि अर्पित करने पहुँचे। हाजरी को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कार्यक्रम की जमकर तारीफ की। अन्त में सभी आर्य बन्धुओं ने ऋषि प्रसाद का भी भरपूर आनंद उठाया।

अन्त में सभी को सभा के कैलेंडर तथा आर्य वैदिक साहित्य भी भेंट स्वरूप दिया गया।

-डा. यश चोपड़ा महामंत्री आर्य समाज गौशाला रोड, फगवाड़ा

आर्यसमाज बंगा का 35वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बंगा का 35वाँ वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद शतकयज्ञ दिनांक 1.12.2016 वीरवार से 4.12.2016 रविवार तक बड़ी श्रद्धा एवं धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य रामानन्द शिमला एवं स्वामी डा. पूर्णानन्द सरस्वती मथुरा द्वारा चारों वेदों के पवित्रमन्त्रों से प्रत्येक दिन अलग-अलग यज्ञमानों द्वारा आहुतियां अर्पण करवाई गई। उसके पश्चात् पं० उपेन्द्र आर्य चन्डीगढ़ द्वारा मनोहर भजन प्रस्तुत किये गये।

अन्तिम दिन दिनांक 4.12.16 दिन रविवार को पूर्णाहुति सभी यज्ञमानों को आशीर्वाद के उपरान्त बहन श्रीमती रश्मि घई माडल टाउन जालंधर ने अपने कर कमलों द्वारा ओ३म् ध्वाजा फहराकर सम्मेलन का शुभारम्भ किया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री अरविन्द घई प्रधान आर्य समाज माडल टाउन जालंधर ने किया।

आदरणीय घई साहब की अध्यक्षता में रहकर सम्मेलन को सुचारू रूप से संचालन करने का कार्यक्रम पं० श्याम लाल आर्य मंत्री आर्य समाज बंगा ने किया। सर्वप्रथम स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती ने अपने मधुर भजनों द्वारा राष्ट्र भक्ति एवं एकता तथा स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

उसके पश्चात् पं० उपेन्द्र आर्य चन्डीगढ़ ने अपनी मधुर द्वारा ऋषि की महिमा एवं पारिवारिक सौहार्द तथा राष्ट्रीय एकता के भजन सुनाकर आए हुए सभी भक्तजनों को सन्देश दिया कि अन्त में स्वरों की कोकिला बहन श्रीमती रश्मि घई ने ओ३म् जपो मेरे भाई ओ३म् जपो मेरी बहना तथा ऋषि का गुणगान करके सभी को झूमने पर मजबूर कर दिया।

उपरान्त वैदिक राष्ट्रीय प्रवक्ता आचार्य रामानन्द शिमला वालो ने लगभग एक घंटे के प्रवचन में राष्ट्र की एकता कैसे हो सकती है। उसकी रक्षा किस प्रकार से हो सकती है। इस उपर प्रकाश डालते हुए बड़े सारगर्भित प्रवचन दिये। उन्होंने कहा कि जब तक हमारी भाषा एक हमारा धर्म एक हमारा संकल्प एक हमारा ग्रन्थ एक नहीं होगा। तब तक हमारी एकता सम्भव नहीं है। हमें वेदों की ओर मुड़ना होगा। हमें संस्कारों से जुड़ना होगा। तभी हमारी एकता सम्भव है।

ततपश्चात आदरणीय अध्यक्ष महोदय श्री अरविन्द घई जी ने आर्यसमाज की गतिविधियों को और तेज करने के लिए आहवान किया। उन्होंने आर्य समाज बंगा के सिलाई केन्द्र को सुन करके कि यहां आज 42 वर्ष से लगातार चल रहा है। बड़े प्रसन्न हुए। और सिलाई के साथ-साथ कम्पयूटर की शिक्षा देने के लिए जोर दिया तथा अपने कोष से दो कम्पयूटर एवं बहुत सी धनराशि दी।

हमें बताते हुए हर्ष हो रहा कि इस सिलाई केन्द्र में गाँवों की गरीब घरों की लड़कियां सिलाई की शिक्षा ग्रहण करके अपने जीवन का निर्माण कर रही है। इस अवसर पर गरीब छात्राओं को वजीफा भी दिया तथा सिलाई में उत्तीर्ण छात्राओं को प्रमाण पत्र के साथ-साथ 10 सिलाई मशीनें भी मुफ्त दी गई। समारोह में शहर के अलावा गाँवों से नर नारियों तथा नवांशहर/जालंधर/फगवाड़ा/बलाचोर/गढ़शंकर से भी भक्तजनों ने आकर उत्सव की शोभा को बढ़ाया तथा आत्मिक आनन्द प्राप्त किया।

उत्सव की सफलता के लिए सर्व श्री विनोद शर्मा प्रधान आर्य समाज बंगा, नरेन्द्र गोगना, देवेन्द्र सूदन, रामभरोसे डा० वी० के अरोड़ा नवांशहर डा० राजेश शर्मा पूनीमा की अशोक शर्मा बंगा, श्री प्रदीप चावला, श्री राकेश सूरी श्री अशोक महेन्द्र श्री विजय हयाल, श्री देवराज अरोड़ा श्री महेन्द्र मोहन भनोचा पानीपत श्री सुशील कुमार आर्य, श्री विकास गोगना श्रीमती प्रवीण गांधा श्रीमती रक्षा रानी आदि ने तन-मन धन से सहयोग दिया। अन्त में सभी सदस्यों ने श्री शादीलाल जी महेन्द्र संरक्षक आर्य समाज बंगा से आशीर्वाद लेकर वेद के प्रचार प्रसार के लिए संकल्प लिया। ऋषि लंगर ग्रहण किया। आदरणीय संरक्षक महोदय श्री शादीलाल महेन्द्र ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया। प्रोग्राम अत्यन्त सफल रहा।

-श्याम लाल आर्य मंत्री आर्य समाज बंगा

www.thearyasamaj.org

"आर्य समाज बरनाला में वेद-ज्ञानोत्सव सम्पन्न"

आर्य समाज बरनाला में दिनांक : 15.12.16 से 18.12.16 तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में मानयोग प्रधान डा. सूर्यकान्त शोरी के कुशल नेतृत्व में वेद-ज्ञानोत्सव बरनाला की शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य सदस्यों के सहयोग से श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य जगत् के ओजस्वी वैदिक प्रवक्ता श्रद्धेय आचार्य श्री नारायण सिंह आर्य एवं महान भजनोपदेशक पं. निदेश आर्य 'पथिक' जी दिव्य आध्यात्मिक सत्संग हेतु आमंत्रित किए गए थे।

दिनांक 15.12.16 से 17.12.16 तक के सायंकालीन सत्संग का आयोजन रात्रि 8:00 से 10:00 बजे तक आर्य समाज बरनाला के सत्संग हाल में किया गया। आर्य जगत् के महान वैदिक भजनोपदेशक पं० दिनेश आर्य 'पथिक' जी ने अपने सुमधुर वैदिक-भजन एवं देश-भक्ति के गीतों द्वारा उपस्थित जन-समुदाय को मन्त्र-मुग्ध एवं आत्म विभोर करते रहे। श्रद्धेय आचार्य श्री नारायण सिंह आर्य जी ने अपने ओजस्वी वैदिक प्रवचनों के द्वारा समाज के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा किए गए उपकारों से अवगत करवाया एवं वैदिक संस्कारों को अपनाकर सुव्यवस्थित जीवन-कला को धारण करने के लिए प्रेरित किया। रात्रिकालीन सत्संग के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य श्री भारत भूषण मैनन, श्री लाल बहादुरशास्त्री आर्य महिला कॉलेज की प्राचार्या-डा. नीलम शर्मा एवं वाइस प्रैज़ीडेन्ट श्री केवल कृष्ण जिन्दल जी के सौजन्य से प्रसाद-वितरण किये गए।

आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में वैदिक-संस्कृति से युक्त नैतिक भावना जागृत करने हेतु दिनांक 16.12.16 को गाँधी आर्य हाई स्कूल एवं दिनांक 17.12.16 को दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर बरनाला में यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया गया।

दिनांक 18 दिसम्बर दिन-रविवार को वेद-ज्ञानोत्सव के समापन पर देश की सुख-समृद्धि के लिए यज्ञ किया गया। जिसमें मुख्य यज्ञमान के रूप में श्री राजीव वर्मा, (जिला प्रधान बी. के. ओ एवं शिरोमणि अकाली दल एन. जी. ओ विंग) ने आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ के ब्रह्मा के रूप में पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री जी ने सुमधुर वेद-मन्त्रोच्चारण करते हुए यज्ञ सम्पन्न करवाया। समापन समारोह पर मुख्य अतिथि श्री राजीव वर्मा जी ने ऋषि-लंगर हेतु इक्कीस हजार रूपये की सहायता राशि प्रदान की। समापन समारोह में नगर के गणमान्य सदस्य-श्री कमल शर्मा, डा० रूप चन्द-बांसल-धनौला एवं श्रीमती तृप्ता बांसल, श्री रघुवीर चन्द, श्री सत्यपाल गर्ग श्री राम शरणदास गोयल, श्री सतीश सिन्धवानी, श्री केवल जिन्दल, श्री राजेश गाँधी, श्री शिव कुमार बत्ता, श्री सूरजभान गर्ग, श्री चन्द्र मोहन गर्ग, श्री राम कुमार गुप्ता, आदि सदस्य सपरिवार शामिल हुए। डॉ० रूप चन्द बांसल जी ने अपने नेक कमाई से आर्य समाज बरनाला को 5100/- (इक्यावन सौ रुपये) दान राशी प्रदान की। धन्यवाद-ज्ञापन में श्री भारत भूषण मैनन जी एवं डॉ० सूर्यकान्त शोरी ने जन-समुदाय को सम्बोधित किया। प्रिंसीपल- श्री राम कुमार सोवती जी की देख-रेख में पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था की गई। बरनाला की आर्य शिक्षण संस्थाओं के स्टाफ वर्ग, व आर्य समाज के सदस्यों का कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण योगदान रहा। शान्ति पाठ के बाद ऋषि-प्रसाद वितरण किया गया। सभी आगन्तुक श्रोतागण एवं उपस्थित सदस्यों ने श्रद्धापूर्वक ऋषि-लंगर ग्रहण किया।

-मन्त्री आर्य समाज बरनाला

पृष्ठ 2 का शेष-लौह पुरूष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

अविस्मरणीय काम किया। स्वदेशी प्रचार, गोरक्षा, राष्ट्रभाषा प्रचार, स्त्री शिक्षा के लिए आपने सारे देश का कई बार भ्रमण किया। पीड़ित सेवा के लिए सदैव अग्रणी रहे। आप कई भाषाओं के विद्वान लेखक, सुवक्ता व इतिहास के सर्मज्ञ विद्वान थे। आप वर्षो आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्ता प्रधान रहे।

महाप्रयाण-'Sound mind in a sound body' बलवान शरीर में बलवान आत्मा की उक्ति आप पर अक्षरण: चरितार्थ होती है। भीमकाय स्वतन्त्रानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे। 3-4-1955 को बम्बई में आप को निर्वाण प्राप्त हुए।

आर्य समाज मन्दिर चौक आर्य समाज पटियाला की ओर से स्वैटर बांटे गए

आर्य समाज मन्दिर, चौक आर्य समाज पटियाला की ओर से आर्य कन्या सीनीअर सैकण्डरी स्कूल पटियाला के लगभग 70 जरूरतमन्द बच्चों/छात्र/छात्राओं को 24.12.16 को कोटीयाँ/स्वैटर वितरण किए गए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन/यज्ञ से 12.00 बजे किया गया। आर्य समाज के पुरोहित श्री गजेन्द्र शास्त्री जी ने प्रधान श्री राज कुमार सिंगला, अन्य पदाधिकारी और स्कूल की अध्यापिकाओं की उपस्थिती में बच्चों से यज्ञ करवाया, जो लगभग एक बजे तक हुआ। इसके पश्चात प्रधान जी और अन्य पदाधिकारीओं ने आर्य कन्या स्कूल के लगभग 70 (सत्तर) बच्चों को गर्म कोटीयां बाँटी, जिसे पाकर बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। स्कूल की अधियापिकाओं ने आर्य समाज का धन्यवाद किया।

आर्य समाज मन्दिर, चौक आर्य समाज पटियाला द्वारा ऐसे कार्यक्रम पहले भी आयोजित होते रहते हैं और ईश्वर की कृपा बनी रही, तो भविष्य में भी ऐसे परोपकार के काम करते ही रहेगे।

-वेद प्रकाश तुली मन्त्री

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

दिनांक 25/12/2016 को आर्य समाज दीनानगर में अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता स्वामी सदानन्द जी महाराज अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर ने की। दयानन्द मठ के शास्त्री किशोर एवं शास्त्री निवास जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर बहुत सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। आर्य समाज के प्रधान श्री रघुनाथ सिंह शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर विस्तार में प्रकाश डाला।

अन्त में स्वामी सदानन्द जी महाराज ने बहुत ही क्रान्तिकारी उदबोधन में स्वामी जी महाराज का चित्र चित्रण किया। उन्होंने कहा कि वास्तव में महर्षि दयानन्द जी महाराज का स्वप्न यदि किसी महापुरूष ने पूरा किया है तो वह स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ही थे। उन्होंने ही गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना करके आर्ष शिक्षा प्रणाली शुरू की, इस अवसर पर आर्य समाज के सचिव रमेश महाजन, कोषाध्यक्ष राजेश महाजन, भारतेन्दु ओहरी, योगेन्द्र पाल गुप्ता, ईश्वर भल्ला बाबा लाल महाजन, वेद प्रकाश ओहरी, प्रिंसीपल अजमेर सिंह, गुरवचन आर्य मनोहर सैन ओहरी, सरदारी लाल एवं दयानन्द मठ के सभी ब्रह्मचारी उपस्थित थे। अन्त में ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

-रमेश महाजन मंत्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया

आर्य समाज संगरूर में दिनाँक 23 दिसम्बर 2016 शुक्रवार को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्रद्धापूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ हवन यज्ञ के द्वारा हुआ। स्कूल के बच्चों ने इस पर्व पर भजन गाकर सबको आनन्दित किया। प्रिंसीपल श्री जगननाथ सिंगला की रहनुमाई में दोनों स्कूलों लाजपत राय कन्या विद्यालय एवं दयानन्द माडल स्कूल के समूह स्टाफ में शामिल होकर ऋषि को श्रद्धा सुमन भेंट किए श्री ओम प्रकाश दुआ, बहिन राज रानी, अनीता रानी ने भी स्वामी जी के चरणों में भजन गाकर अपनी हाजरी लगवाई। पुरोहित कृष्ण मोहन एवं श्री रत्न लाल माँडला ने स्वामी के जीवन के सभी पहलुओं को व्याख्यान द्वारा प्रस्तुत किया। प्रधान श्री जगननाथ गोयल जी की अध्यक्षता में श्री आर पुल पांधी वद्री जिंदल, चौधरी पुन. पुल गाँधी, राजिन्द्रगांधी, अरविन्द्र कुमार, मेहर चन्द्र, विष्णु राम आदि ने भाग लिया। स्टेज का संचालन मंत्री चन्द्र प्रकाश पोपली ने अच्छी प्रकार निभाया।

-चन्द्र प्रकाश पोपली मंत्री

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट को सम्मानित करते हुए आर्य समाज नवांशहर के कार्यकारी प्रधान जी विनोद भारद्वाज मन्त्री जियालाल एवं अन्य

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में डब्ल्यू. एल. आर्य गर्ल्ज सी. सै. स्कूल नवांशहर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जन कल्याण दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य समाज के पुरोहित पं. अमित शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में हवन यज्ञ से हुआ। यज्ञ के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट के करकमलों द्वारा ओ३म् की पताका फहराई गई। स्कूल के छात्र एवं छात्राओं ने स्वागत गीत गाया। आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने उपस्थित आर्यजनों का स्वागत किया और अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन को कल्याण मार्ग का राही बनाने का प्रयास करना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने प्रभु भक्ति, देशभक्ति एवं महर्षि दयानन्द के गीतों से सबको सराबोर किया। सभा के महोपदेशक पं. विजय शास्त्री जी ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश ड़ाला और सभी को उनके प्रेरणादायक जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। मुख्यातिथि महोदय श्री अशोक परूथी जी ने कहा कि हमें स्वामी जी के सपनों को पूरा करने के लिए हमेशा कार्य करते रहना चाहिए।

उन्होंने आर्य समाज नवांशहर द्वारा किए जा रहे जनकल्याण के कार्यों की सराहना की। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज की ओर से असहाय लोगों के सहायतार्थ कम्बल वितरित किए गए। आर्य समाज के मन्त्री श्री जियालाल जी ने सबका धन्यावाद किया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पुरोहित श्री अमित शास्त्री जी ने किया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ तथा सभी ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

अरविंद नारद प्रचार मन्त्री आर्य समाज नवांशहर

लुधियाना में स्वामी श्र ानन्द बलिदान दिवस समारोह

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के समारोह में ज्योति प्रज्जवलित करते हुए श्रीमती रमेश एवं श्री रवि महाजन तथा कार्यक्रम में भाग लेती हुई माताएं एवं आर्यजन

ज़िला आर्य सभा, लुधियाना द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य समारोह का आयोजन रविवार 25 दिसम्बर को आर्य सीनियर सैंकडरी स्कूल, लुधियाना में श्रद्धा व उत्साह के साथ किया गया। समारोह का शुभारम्भ पं० रमेश कुमार जी शास्त्री ने पवित्र यज्ञ से करवाया। तीन यज्ञ कुण्डों पर चारों ओर बैठे यजमानों ने बड़ी श्रद्धा के साथ आहुतियां प्रदान कीं। यज्ञ का प्रबन्ध श्री श्रवण बत्रा जी ने सुचारू ढंग से किया। श्रीमती रमेश एवं श्री रवि महाजन (ईरावती इंडस्ट्रीज़ लुधियाना) जी ने समारोह की ज्योति का प्रज्वलन किया। श्री अरूण थापर श्रीमती इन्द्रा होड़ा व नीलम थापर इस समारोह के विशिष्ट अतिथि रहे। इन सब अतिथियों का उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने फूल मालाएं डाल कर हार्दिक अभिनन्दन किया। पं० राजेन्द्र व्रत जी ने प्रभुभक्ति का भजन "ओ३म् का जाप कर" गाया।

मोगा से पधारे आचार्य दिवाकर भारती जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर बोलते हुए कहा कि अन्धकार व बुराइयों में फंसे मुंशीराम जब स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आए तो उनके जीवन में ऐसा परिवर्तन हुआ कि वह कल्याणमार्ग के पथिक बने एवं अपने जीवन की सारी बुराईयों को छोड़ समाज सुधार व राष्ट्र सेवा में अपना सारा जीवन आहूत कर दिया। भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु उन्होंने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की जिसमें शिक्षा के साथ-साथ बच्चों को राष्ट्र भक्ति, नैतिकता व धर्म के साथ जोड़ा। कन्या शिक्षा, दलितोद्धार शुद्धि आन्दोलन व स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्रधार बनें। उनका मन्तव्य सभी जातियों के लोगों को एक मंच पर इकट्ठा कर देश की स्वतन्त्रता के लिए तैयार करना था एवं एक दूसरे के प्रति शांति व सदभावना रखना था। आज आवश्यकता है कि देश का प्रत्येक व्यक्ति स्वामी दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा ले, उपकार के कार्य करे, जातिय सदभावना के साथ रहे ताकि राष्ट्र की अखंडता बनी रहे व शांति का वातावरण हो।

आर्य गर्ल्ज़ सीनियर सैंकड़री स्कूल की कुमारी स्वाति नैनां, नेहा ने भजन व विचार प्रस्तुत किए एवं एक सामूहिक गीत सुनाया। डी. ए. वी स्कूल की छात्रा आस्मिन शर्मा ने कविता "संकल्प" तथा दयानन्द पब्लिक स्कूल की "पार्वती" ने स्वामी श्रद्धानन्द की जीवन गाथा सुनाई। बच्चियों के कार्यक्रम को सब ने बहुत सराहा।

आर्य समाज समराला से पुरोहित पं० राजेन्द्र व्रत जी ने अपनी जोशीली वाणी से पंजाबी में "स्वामी श्रद्धानन्द वीर बलिदानी के तेरे तो ज़माना सदके" तथा "मैं चिठ्ठी पावां दयानन्द नूं विच हंजुआ दे लफ्ज पिरोवां" भजन सुनाकर सब का मन मोह लिया। सारे कार्यक्रम का संचालन जिला आर्य सभा के महामंत्री डॉ० विजय सरीन जी ने किया। कार्यक्रम के अंत में जिला आर्य सभा की प्रधान श्रीमती राजेश शर्मा जी ने अपने संबोधन में कहा कि हमें केवल मात्र मंत्र पाठ को ही प्रभु की उपासना नहीं समझना चाहिए बल्कि उनके अर्थों को समझते हुए अपने आचरण को उसी प्रकार बनाना होगा तभी हम सच्चे आर्य बन सकेंगें अपने मनों से ईर्ष्या व द्वेष की भावना समाप्त कर आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाना होगा। उन्होंने सभी विद्वानों, संस्थाओं एवं उपस्थित जनों का धन्यवाद किया। ईश्वर की अपार कृपा से सारा कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, ईश्वर का बार-बार धन्यवाद ! इस कार्यक्रम में लुधियाना नगर की सभा आर्य-समाजों, स्त्री आर्य समाजों व शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ आर्य समाज समराला, राएकोट पायल, पुरोहित सभा एवं आर्य वीर दल के अधिकारी व सदस्य तथा शहर के अन्य गणमान्य व्यक्ति बहुत संख्या में उपस्थित हुए।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्व श्री संजीव चड्डा, रमाकांत महाजन, सुरिन्द्र टंडन, सुशील मोदगिल, हर्ष आर्य, बृज मोहन अरोड़ा, श्रीमती विनोद गांधी, जनक राज, प्रिं० रेखा, प्रिं० ज्योति जोशी, प्रिं० सुनीता मलिक का विशेष सहयोग रहा। सर्व श्री सतपाल नारंग, रमेश सूद, महेन्द्र प्रताप, मनोहर लाल, सतीश गुप्ता, शुभम कपूर, डा० बी. भनोट, अनिल कुमार, सतपाल मोंगा, गरीब दास, पं० बालकृष्ण शास्त्री, राजेन्द्र कौड़, रामपाल, संजय विरमानी, अमरनाथ तागंरा, अमरेश, श्रीमती जनकरानी, उमा शर्मा, बाला गंभीर, अनुपमा गुप्ता, डा० सुमन शारदा, जानकी आहूजा, जी ने पहुँच कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। शांति पाठ के पश्चात् सभी ने मिल कर ऋषि लंगर ग्रहण किया। आर्य सीनीयर सैंकडरी स्कूल लुधियाना की प्रबन्धकत्री सभा एवं स्टाफ का पूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद।

-विजय सरीन (महामंत्री जिला आर्य सभा, लुधियाना)

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।